कविता चारा - पंकज त्रिवेदी

एड़मिशन,
पढ़ाई,
नौक़री...
सब जगह डालना पड़ता है चारा

सुबह से
छोटी सी मछली को कांटे में चारा
बनाकर बैठा
इंसान
इंतज़ार करता है बड़ी मछली के शिकार का...

शाम ढ़ली
निराश होकर देखा लौटते हुए
एक मछुआरा जाल पूरी भर
मछलियाँ लेकर नीकला

तब
एक जेंटलमेन अफसर की
गिरफ़्तारी होती है बिनअधिकृत
मिलकत के लिए...
फ़ज़ीहत के बाद निर्दोष बरी हुए
अफसर के
छोटे से कारकुन, बुज़दिल परीवार और
प्रतिष्ठा को दाँव पर रख़कर
चार दिवारों के एक्वेरियम में
तड़फड़ाता है...

व्हेल मछली सागर की विशाल
गहराई को नज़रअंदाज करके
तैरती है
मौज से...!

हर्ष, गोकुलपार्क सोसायटी, 80 फूट का रास्ता, सुरेन्द्रनगर-363002